विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

भाग एक

भूमिका

प्रथम अध्याय — विषय उपस्थापन — 1-14

1.1 विषय कथन

1.2 सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

1.3 विषय परिसीमन

1.4 अध्ययन का महत्व

1.5 अध्ययन का अनुक्रम

द्वितीय अध्याय — लेखकीय परिप्रेक्ष्य — 15-32

2.1 अज्ञेय का साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व

2.2 अज्ञेय का साहित्य

2.2.1 सर्जनात्मक साहित्य

2.2.1.1 उपन्यास

2.2.1.2 काव्य

2.2.1.3 कहानियां

2.2.1.4 निबन्ध

2.2.2 सर्जनेतर साहित्य

2.2.2.1 सम्पादकीय कार्य

2.2.2.2 समीक्षात्मक कार्य

पृष्ठ संख्या

तृतीय अध्याय — सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य — 33-139

3.1 भाषा

3.1.1 भाषा के भेद

3.1.1.1. सर्जनात्मक भाषा

3.1.1.2 सर्जनेतर भाषा

3.1.1.1.1 काव्यभाषा

3.1.1.1.2 कथाभाषा

3.1.1.1.3 काव्यभाषा और कथाभाषा का तुलनात्मक अध्ययन

3.1.1.1.3.1 ध्वनि-स्तर

3.1.1.1.3.1.1 विचलित ध्वनियां

3.1.1.1.3.1.2 समान्तरित ध्वनियां

3.1.1.1.3.1.3 विपथित ध्वनियां

3.1.1.1.3.1.4 विरल ध्वनियां

3.1.1.1.3.2 रूप-स्तर

3.1.1.1.3.2.1 विचलित रूप योजना

3.1.1.1.3.2.2 समान्तरित रूप योजना

3.1.1.1.3.2.3 विपथित रूप योजना

3.1.1.1.3.2.4 विरल रूप योजना

3.1.1.1.3.3 शब्द-स्तर

3.1.1.1.3.3.1 विचलित शब्द-योजना

3.1.1.1.3.3.2 समांतरित शब्द-योजना

3.1.1.1.3.3.3 विपथित शब्द-योजना

3.1.1.1.3.3.4 विरल शब्द-योजना

पृष्ठ संख्या

3.1.1.1.3.4 वाक्य संरचना का सन्दर्भ

3.1.1.1.3.4.1 विचलित वाक्य-योजना

3.1.1.1.3.4.2 समान्तरित वाक्य-योजना

3.1.1.1.3.4.3 विपथित वाक्य-योजना

3.1.1.1.3.4.4 विरल वाक्य-रचना

3.1.1.1.3.5 अर्थ-स्तर

3.1.1.1.3.5.1 विचलित अर्थ-योजना

3.1.1.1.3.5.2 समान्तरित अर्थ-योजना

3.1.1.1.3.5.3 विपथित अर्थ-योजना

3.1.1.1.3.5.4 विरल अर्थ-योजना

3.1.1.1.3.6 प्रोक्तस्तर

3.1.1.1.3.6.1 प्रोक्त स्तरीय विचलन

3.1.1.1.3.6.2 प्रोक्त-स्तरीय समान्तरता

3.1.1.1.3.6.3 प्रोक्त स्तरीय विरलता

3.1.1.1.3.6.4 प्रोक्तस्तरीय विपथन

भाग दो

विषय विवेचन

चतुर्थ अध्याय — अज्ञेय की काव्यभाषा का अध्ययन — 140-259

4.1 ध्वनि-स्तर

4.1.1 विचलित ध्वनियाँ

4.1.2 समान्तरित ध्वनियाँ

4.1.3 विपथित ध्वनियाँ

4.1.4 विरल ध्वनियाँ

4.2 रूप-रचना का सन्दर्भ

4.2.1 विचलित रूप-योजना

4.2.2 समान्तरित रूप-योजना

4.2.3 विपथित रूप-योजना

4.2.4 विरल रूप योजना

पृष्ठ संख्या

4.3 शब्द-योजना का सन्दर्भ

4.3.1 विचलित शब्द-योजना

4.3.2 समान्तरित शब्द-योजना

4.3.3 विपथित शब्द-योजना

4.3.4 विरल शब्द-योजना

4.4 वाक्य संरचना का सन्दर्भ

4.4.1 विचलित वाक्य रचना

4.4.2 समान्तरित वाक्य रचना

4.4.3 विपथित वाक्य रचना

4.4.4 विरल वाक्य रचना

4.5 अर्थ सन्दर्भ

4.5.1 विचलित अर्थ योजना

4.5.2 समान्तरित अर्थ-योजना

4.5.3 विपथित अर्थ-योजना

4.5.4 विरल अर्थ-योजना

4.6 प्रोक्ति स्तर

4.6.1 प्रोक्ति स्तरीय विचलन

4.6.2 प्रोक्ति स्तरीय समान्तरता

4.6.3 प्रोक्ति स्तरीय विपथन

4.6.4 प्रोक्ति स्तरीय विरलता

पंचम अध्याय — अज्ञेय की कथाभाषा का अध्ययन — 360-353

5.1 ध्वनि-स्तर

5.1.1 विचलित ध्वनियां

5.1.2 समान्तरित ध्वनियां

5.1.3 विपथित ध्वनियां

5.1.4 विरल ध्वनियां

पृष्ठ संख्या

5.2 रूप-स्तर

5.2.1 विचलित रूप-योजना

5.2.2 समान्तरित रूप-योजना

5.2.3 विपथित रूप-योजना

5.2.4 विरल रूप योजना

5.3 शब्द-योजना का सन्दर्भ

5.3.1 विचलित शब्द-योजना

5.3.2 समान्तरित शब्द-योजना

5.3.3 विपथित शब्द-योजना

5.3.4 विरल शब्द-योजना

5.4 वाक्य संरचना का सन्दर्भ

5.4.1 विचलित वाक्य रचना

5.4.2 समान्तरित वाक्य रचना

5.4.3 विपथित वाक्य रचना

5.4.4 विरल वाक्य रचना

5.5 अर्थ सन्दर्भ

5.5.1 विचलित अर्थ योजना

5.5.2 समान्तरित अर्थ-योजना

5.5.3 विपथित अर्थ-योजना

5.5.4 विरल अर्थ-योजना

5.6 प्रोक्ति स्तर

5.6.1 प्रोक्ति स्तरीय विचलन

5.6.2 प्रोक्ति स्तरीय समान्तरता

5.6.3 प्रोक्ति स्तरीय विपथन

5.6.4 प्रोक्ति स्तरीय विरलता

पृष्ठ संख्या

षष्ठ अध्याय — अज्ञेय की काव्यभाषा और कथाभाषा का तुलनात्मक अध्ययन — 354-372

6.1 ध्वनि-स्तर

6.2 रूप रचना का सन्दर्भ

6.3 शब्द-योजना का सन्दर्भ

6.4 वाक्य संरचना का सन्दर्भ

6.5 अर्थ-सन्दर्भ

6.6 प्रोक्ति-स्तर

अज्ञेय की काव्यभाषा के उपकरण

अज्ञेय की कथाभाषा के उपकरण

अज्ञेय पहले कवि हैं या कथाकार ?

अज्ञेय की काव्यभाषा में कथाभाषा का अभिग्रहण कहाँ तक हुआ है ?

अज्ञेय की कथाभाषा में काव्यभाषा का अभिग्रहण कहाँ तक हुआ है ?

भाग तीन

विषय समापन

सप्तम अध्याय — उपसंहार — 373-376

7.1 अध्ययन का सार

7.2 निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ

7.3 शोध-संकेत

भाग चार

परिशिष्ट — 377-383

सहायक सन्दर्भ सूची